जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

चूरू

Rashtradoot

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 14 संख्याः 147 प्रभात चूरू, शनिवार 24 सितम्बर, 2022 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

कीटनाशक युक्त फूल पर बैठने के बाद मधुमक्खियां इतनी ज्यादा प्रभावित हो जाती हैं कि वे सीधी लाइन में उड़ भी नहीं पातीं । शोधकर्ताओं ने पाया कि कीटनाशक मधुमक्खियों के नर्वस सिस्टम को गंभीर नुकसान पहुंचाते हैं। नए शोध में वैज्ञानिकों ने सल्फॉक्साफ्लोर और इमिडक्लोप्रिड, जैसे कीटनाशकों के मधुमक्खियों पर प्रभाव का अध्ययन किया। युनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफर्ड में वैज्ञानिक, मुख्य शोध लेखक रेचल पार्किन्सन ने कहा कि, ''मेरे पूर्व शोध में सामने आया था कि कीटनाशकों के संपर्क में आए टिड्डे रास्ते में आने वाली वस्तुओं से टकराने से बचने के लिए ना तो जंप करते हैं ना ही अपना रास्ता बदलते हैं। क्योंकि कीटनाशकों की वजह से उनकी देखने की क्षमता प्रभावित हो जाती है। मैं यह देखना चाहती थी कि क्या मधुमक्खियों पर भी ऐसा कोई प्रभाव पड़ता है? क्योंकि उड़ान को स्थिर करने व दिशाज्ञान के लिए मधुमक्खियाँ भी किसी वस्तु की चाल व गति को देख पाने की अपनी क्षमता पर निर्भर होती हैं, जो कि कीटनाशकों से प्रभावित हो जाती हैं। मेरा मत था कि, कीटनाशक से ''कॉलोनी कोलैप्स डिस्आर्डर'' हो सकता है। जिसके कारण कीटनाशकों के संपर्क में आई मधुमक्खियों को अपने घर वापस जाने में बहुत मुश्किल होती है। यह विकार सबसे पहले वर्ष 2000 की शुरुआत में देखा गया था जब मधुमक्खियों की आबादी में भारी कमी आई थी। कुछ मधुमक्खी पालकों ने कहा कि, उनके यहाँ मधुमक्खियों की संख्या 30-90 प्रतिशत कम हुई। रानी मक्खी और अवयस्क मधुमक्खियां तो रह गईं पर श्रमिक मधुमक्खियां लुप्त हो गई थीं और श्रमिकों के अभाव में कॉलोनियां नष्ट हो गईं। एक स्वस्थ मधुमक्खी में ''ऑप्टोमीटर रैस्पॉन्स'' क्षमता होती है, जो उसे सीधे रास्ते पर लौटने में मदद करती है। इस शोध के लिए वैज्ञानिकों ने प्रयोगशाला में मधुमक्खियों को 5 दिनों तक, सुक्रोज़ में मिलाकर कई प्रकार के कीटनाशकों से एक्सपोज़ किया। उन्होंने पाया कि जिन मधुमक्खियों को कीटनाशकों से एक्सपोज़ किया गया था वे सीधी दिशा में आगे नहीं बढ़ सकीं। ये नतीजे फंट्रियर्स इन इन्सैक्ट साईन्स में छपे हैं।

गहलोत तब तक मु.मंत्री बने रहना चाहते हैं, जब तक वे कांग्रेस अध्यक्ष निर्वाचित नहीं होते

दूसरी ओर सोनिया गांधी ने गहलोत से कहा है कि, नामांकन पर्चा भरने से पहले अपना इस्तीफा दे दें

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 सितम्बर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने तय कर लिया है कि वे राजी-खुशी से नहीं जायेंगे, बल्कि वे तब तक यहाँ रुके रहेंगे, जब तक वे बाकायदा कांग्रेस अध्यक्ष नहीं बन जाते। और अगर चुनाव हुआ, जिसकी संभावना ज्यादा दिखाई दे रही है, तो वह अगले माह में ही होगा।

सोनिया गांधी ने गहलोत से कह दिया है कि उन्हें नामांकन पत्र दाखिल करने, जो अगले सप्ताह होगा, से पहले, अपना त्याग पत्र दे देना चाहिये।

लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि गहलोत के मन में कुछ और ही है। गहलोत के निकटस्थ एक ए.आई.सी.सी. पदाधिकारी ने कहा कि नये मुख्यमंत्री के विषय में निर्णय अगले माह के अंत तक ही होगा क्योंकि कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिये चुनाव 17 अक्टूबर को है।

- जैसा की विदित ही है, अध्यक्ष पद का चुनाव 17 अक्टूबर को होगा तथा नामांकन पर्चा दाखिल करने की अंतिम तारीख तीस सितम्बर है।
- अतः सवाल यह है कि, गहलोत अपना इस्तीफा इस महीने अंत तक, तीस सितम्बर तक दे देंगे या अगले महीने अध्यक्ष पद का चुनाव हो जाने के बाद, 17 अक्टूबर के बाद देंगे।
- अब तक गहलोत, सोनिया गांधी को किसी न किसी तरह मनाकर अपने मन माफिक निर्णय करा लेते थे, पर इस बार यह संभव होता नहीं दिख रहा है, क्योंकि इस बार राहुल गांधी व प्रियंका गांधी इस बारे में दृढ़ संकल्प हैं कि, गहलोत के मु.मंत्री रहते हुए, अगर राजस्थान में विधानसभा चुनाव हुए तो, कांग्रेस की सत्ता में आने की कोई आशा भी नहीं रहेगी, अतः किसी युवा नेतृत्व की कप्तानी में विधानसभा चुनाव लड़ना पार्टी के हित में है।

उन्होंने साफ-साफ कहा कि गहलोत तब तक इस्तीफा नहीं देंगे, जब तक वे पार्टी अध्यक्ष चुन नहीं लिये जाते। चूँकि कई अन्य लोग भी चुनाव लड़ रहे हैं, इसलिये जानकार लोगों का कहना है कि ऐनवक्त पर कुछ भी संभावित हो सकता है। विशेष रूप से राजनीति में तो ऐसा होता ही है। सूत्रों का कहना है कि राहुल गांधी के इशारे पर दिग्विजय सिंह भी बोले ही थे, जब उन्होंने कहा था कि कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिये नामांकन पत्र दाखिल करने से पहले, गहलोत को इस्तीफा देना होगा। कांग्रेस नेतृत्व यह समझता है कि कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद, अशोक गहलोत सचिन पायलट के खिलाफ अध्यक्षीय विशेषाधिकार का प्रयोग कर सकते हैं। और इसलिये कांग्रेस नेतृत्व अशोक गहलोत की ओर से किसी प्रकार की खीज का जोखिम उठाना नहीं चाहता।

अशोक गहलोत एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो सोनिया गांधी को अपनी अंगुली पर नचाते रहे हैं, लेकिन इस बार उनका मुकाबला राहुल और प्रियंका गांधी से है, जिन्होंने यह निश्चय कर लिया है कि अगर कांग्रेस पार्टी को अगले विधानसभा चुनावों में अच्छा प्रदर्शन करना है तथा सत्ता में वापस आने की अपनी उम्मीद को जीवित रखना है, तो गहलोत को राजस्थान छोड़ना ही होगा।

सत्ता में वापस आने के लिये

(शेष पृष्ठ 5 पर)

प्रणय सुप्रीम कोर्ट की शरण में

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 सितम्बर। नई दिल्ली लिमिटेड (एन.डी. टी.वी.) के प्रमोटर प्रणव रॉय तथा उनकी पत्नी राधिका रॉय, और उनकी इन्वेस्टमैंट फर्म आर.आर.आर. होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड ने उन पर लगाये गये 5 करोड़ रू. जुर्माने के खिलाफ सर्वोच्च

- एन.डी.टी.वी. के प्रमोटर प्रणय रॉय एवं उनकी पत्नी ने सिक्युरिटीज़ अपैलैट ट्रिब्युनल द्वारा लगाए गए 5 करोड़ रू. के जुर्माने के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील की है।

न्यायालय का दरवाज़ा खटखटाया है। उन पर यह जुर्माना उनके द्वारा ऋण-इकरारनामों के छुपाये जाने के कारण सिक्योरिटीज एपेलैट ट्रिब्यूनल (एस.ए. टी.) द्वारा लगाया गया है।

एन.डी. टी.वी. द्वारा की गई रैग्यूलेटरी फाइलिंग के अन्तर्गत, उन्होंने

(शेष पृष्ठ 5 पर)

उद्धव ठाकरे की बॉम्बे हाई कोर्ट में भारी जीत!

न्यायालय ने ठाकरे की पार्टी को शिवाजी पार्क में दशहरा के अवसर पर रैली आयोजित करने की अनुमति दी

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 सितम्बर। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के लिए यह एक बड़ी जीत है। बॉम्बे हाईकोर्ट ने उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना को मध्य मुम्बई स्थित प्रतिष्ठित शिवाजी पार्क में 5 अक्टूबर को वार्षिक दशहरा रैली आयोजित करने की आज मंजूरी दे दी।

जस्टिस आर.डी. धानुका और जस्टिस कमल खांटा ने ठाकरे के नेतृत्व वाले शिवसेना गुट और उसके सचिव अनिल देसाई द्वारा दायर याचिका पर यह अनुमति दी। याचिका में मुम्बई पालिका के उस आदेश को चुनौती दी थी जिसमें रैली आयोजित करने की मंजूरी नहीं दी गई थी। ब्रहन्मुम्बई म्युनिसिपल कॉरपोरेशन (बी.एम.सी.) ने 21 सितम्बर को कहा था कि वह मंजूरी देने से इन्कार कर रहा है क्योंकि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के

- शिवाजी पार्क का शिव सेना के लिये भारी महत्व है। सन् 1966 में शिव सेना के गठन के बाद बाल ठाकरे ने अपनी पहली बड़ी रैली शिवाजी पार्क में आयोजित की थी तथा 1995 में शिव सेना के प्रथम मु.मंत्री मनोहर जोशी ने अपना शपथ ग्रहण समारोह शिवाजी पार्क में ही आयोजित किया था तथा नवम्बर 2012 में मृत्यु उपरांत बाल ठाकरे का दाह संस्कार यहीं हुआ था।
- शिव सेना के विभाजन के बाद, उद्धव ठाकरे व शिंदे के खेमे, शिवाजी पार्क में दशहरा रैली को आयोजित करने का मामला हाई कोर्ट तक ले गये थे।
- अब शिव सेना के उद्धव ठाकरे के खेमे को रैली के आयोजन की अनुमति मिलने से ठाकरे खेमा अति आल्हादित है।

नेतृत्व वाले शिवसेना के प्रतिद्वंद्वी गुट के विधायक सदा सरवंकर ने ऐसा ही एक आवेदन प्रस्तुत किया है, और यदि एक गुट को मंजूरी दी जाती है तो इससे कानून-व्यवस्था की समस्या उत्पन्न हो जाएगी, जैसी कि स्थानीय पुलिस ने आशंका जतायी है।

हाईकोर्ट द्वारा उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना को मुम्बई के शिवाजी पार्क में दशहरा रैली आयोजित करने की अनुमति प्रदान किए जाने से

(शेष पृष्ठ 5 पर)

गहलोत का गेम प्लान

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 सितम्बर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का एक नया गेम प्लान है। कांग्रेस अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने के बाद एक पार्टी हाईकमान के

- पार्टी अध्यक्ष बनने तक राजस्थान के मु.मंत्री पद पर काबिज रहना और अध्यक्ष बनने के बाद अपनी मर्जी का मु.मंत्री बनाना चाहते हैं गहलोत, ताकि सचिन पायलट को सी.एम. बनने से रोका जाये।

रुप में वह यह तय करना चाहते हैं कि राजस्थान में उनके बाद मुख्यमंत्री पद का उत्तराधिकारी कौन होगा। उन्होंने शुक्रवार को इसके संकेत दिए कि पार्टी अध्यक्ष चुनाव

(शेष पृष्ठ 5 पर)

वो दिन गये जब राजनीतिज्ञ कुछ भी कह सकते थे

सोशल मीडिया आदि से हर नेता का पब्लिक उद्घोष रिकॉर्ड हो रहा है तथा कुछ भी कह कर बच निकलना असंभव हो गया है

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 सितम्बर। पुराने जमाने के राजनेता, टैक्नॉलजी तथा सोशल मीडिया की गैर मौजूदगी में, कुछ भी कहकर बच निकलते थे लेकिन अब, उनके शब्द की मॉनिटरिंग तथा विश्लेषण होता है। इसके उदाहरण स्वरूप कांग्रेस नेता राहुल गांधी की उस भूल को लिया जा सकता है, जब उन्होंने आटे को लीटर में नापने की बात कह दी थी तथा वे बुरी तरह ट्रोल हुये थे।

लेकिन कांग्रेस भी पीछे नहीं है उसने भी कई बार भाजपा दिग्गजों जिनमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी शामिल हैं, की कमियों को पकड़ा और जवाबी हमला किया है। इस समय यह बिल्कुल स्पष्ट है कि प्रौद्योगिकी तथा सोशल मीडिया के युग में, सार्वजनिक जीवन से संबंधित लोगों को अपनी कथनी, करनी एवं आचरण-व्यवहार में बहुत सावधान

- राहुल गांधी ने आटे को लीटर में नापा तो सोशल मीडिया ने उन्हें नहीं बख्शा, बहुत देर तक वे ''ट्रोल'' हुए।
- इसी प्रकार, जब भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने मदुरै में उद्योगपतियों को संबोधित करते हुए कहा, मदुरै में एम्स की बिल्डिंग बनाने का 95 प्रतिशत काम पूरा हो गया है तो, मदुरै के कांग्रेस सांसद व पड़ोसी लोकसभा सीट के मार्क्सवादी पार्टी के सांसद, उस स्थान पर पहुंचे, जहां एम्स की बिल्डिंग 95 प्रतिशत पूरी होने का दावा किया था।
- दोनों सांसदों ने पाया जहां बिल्डिंग बननी थी, वहां एक ईंट भी नहीं रखी गयी है।
- सोशल मीडिया पर भारी शोर मचा कि, एम्स की बिल्डिंग ''चोरी'' हो गयी और यह तूफान भाजपा अध्यक्ष पर व्यंग्य करते हुए कई दिनों तक चला।

रहने की जरूरत है क्योंकि उनकी प्रत्येक गतिविधि आने वाली सन्ततियों के लिये रिकॉर्ड की जाती है तथा तत्काल संदर्भ एवं उनके विरोधियों द्वारा उपयोग एवं दुरुपयोग के लिये उपलब्ध रहती है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

नविका कुमार

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 सितम्बर। सुप्रीम कोर्ट ने भाजपा की पूर्व प्रवक्ता नूपुर शर्मा द्वारा पैगम्बर मोहम्मद पर की गई विवादास्पद टिप्पणियों को टाइम्स नाउ टी.वी. चैनल के प्राइम टाइम शो ''द

- सुप्रीम कोर्ट ने पैगम्बर मोहम्मद के खिलाफ टिप्पणी के विवाद में टाइम्स नाओ की नविका कुमार के खिलाफ दर्ज सभी एफ. आई. आर. क्लब करके दिल्ली पुलिस के सुपुर्द कर दी हैं।

न्यूज़ आवर'' पर एयर करने को लेकर चैनल की ग्रुप एडिटर नविका कुमार (44) के खिलाफ दर्ज सभी एफ.आई. आर. को एक साथ मिलाकर शुक्रवार को दिल्ली पुलिस को हस्तांतरित कर दिया।

जस्टिस एम.आर. शाह और

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सचिन पायलट एयरपोर्ट से सीधे विधानसभा पहुंचकर विधायकों से मिले, फिर पायलट से घर मिलने पहुंचे विधायक

इधर राजेन्द्र गुढ़ा बोले, आलाकमान सचिन पायलट का नाम तय करेगा और जयपुर का खुशनुमा मौसम भी यही इशारा कर रहा है। इसके बाद पायलट से घर जाकर मिले गुढ़ा

जयपुर, 23 सितम्बर (का.प्र.)। राजस्थान के बदलते सियासी घटनाक्रमों के बीच मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कोच्चि से घोषणा की है कि वे कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए नामांकन दाखिल करेंगे, क्योंकि राहुल गांधी ने स्पष्ट कह दिया है कि गांधी परिवार का कोई भी सदस्य कांग्रेस अध्यक्ष नहीं बनेगा। दूसरी ओर बदलते घटनाक्रम के बीच सचिन पायलट जयपुर पहुंचे और सीधे विधानसभा गए, जहां बदले नजारे में उनके स्वागत में हमेशा साथ रहने वाले विधायकों के अलावा गिर्राज सिंह मलिंगा, खुशवीर सिंह जोजावर भी खड़े थे। हां पक्ष लॉबी में उनके साथ वे विधायक भी मौजूद थे, जो अशोक गहलोत की बेहद नजदीकी माने जाते हैं।

सचिन पायलट ने जयपुर पहुंचने के बाद ना सिर्फ विधानसभा पहुंचकर विधायकों के साथ में मुलाकात की। ऐसे संकेतों के बाद स्पष्ट हो गया कि कांग्रेस आलाकमान ने बहुत स्पष्ट रूप से विधायकों को संकेत दे दिया है कि वे मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के उत्तराधिकारी के रूप में किसे देखना चाहते हैं। यही कारण रहा कि बसपा से कांग्रेस में आने वाले तथा पंचायत राज्य मंत्री राजेंद्र सिंह गुढ़ा ने कहा कि हमें लगता है कि आलाकमान सचिन पायलट के नाम को हरी झंडी देगा और हम तथा निर्दलीय विधायक सचिन पायलट के साथ रहेंगे। इसी के साथ उन्होंने कहा कि आज जयपुर का खुशनुमा मौसम भी इसी बात की ओर इशारा कर रहा है।

इधर सचिन पायलट ने जयपुर में विधानसभा पहुंचकर विधायकों के साथ में चर्चा करने के साथ ही विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी के चेंबर में जाकर उनसे भी चर्चा की। ऐसे में माना जा रहा है कि आलाकमान की ओर से सचिन पायलट से कहा गया है कि वे कांग्रेस,निर्दलीय तथा अन्य पार्टियों के विधायकों से मुलाकात करके उनसे आगे की

- विधानसभा में गहलोत के साथ दिखने वाले विधायक भी सचिन पायलट का स्वागत करने पश्चिमी द्वार पर पहुंचे।
- यह बात भी यही बताती है कि, आलाकमान की ओर से सभी को स्पष्ट रूप से संकेत दिए जा चुके हैं कि, आने वाले दिनों में राजस्थान की कमान किसके हाथ में होगी। सभी विधायकों के राजनीतिक स्वर बदलने लगे हैं, जिनमें अशोक गहलोत के कट्टर समर्थक बाबूलाल नागर भी शामिल हैं, जिन्होंने शुक्रवार को स्पष्ट रूप से कहा कि, वह तो खुद राजेश पायलट के कट्टर समर्थक रहे हैं।
- जब भारत जोड़ो यात्रा में एक दिन के विश्राम के लिए राहुल गांधी का दिल्ली आने का कार्यक्रम निरस्त हो गया तो, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत भी दिल्ली जाने के बजाए शिर्डी में साई बाबा के दर्शन करने के बाद सीधे जयपुर लौट आए। यहां आकर गहलोत ने अपने मंत्रिमंडल के कई सदस्यों को मुलाकात के लिये अपने निवास पर बुलाया।

रणनीति को लेकर चर्चा करें। इसीलिए सचिन पायलट अचानक दिल्ली से जयपुर पहुंचने का कार्यक्रम बनाया और इसी कार्यक्रम के मुताबिक उन्होंने विधायकों से मुलाकात की है।

इस बीच माना जा रहा है कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए नामांकन दाखिल करने से पहले मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देंगे और संभावना जताई जा रही है कि उनका नामांकन 28 सितंबर को होगा। ऐसे में उसी दिन कांग्रेस आलाकमान विधायक दल की बैठक बुलाकर मुख्यमंत्री के नाम पर फैसला लेगा। परंपरा के अनुसार विधायक एक लाइन का प्रस्ताव आलाकमान के पास भेजेंगे और उसके बाद आलाकमान निर्देशित करेगा की मुख्यमंत्री की शपथ कब होनी है। यही कारण है कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भी आज के अपने बयानों में कहा है कि मुख्यमंत्री कौन बनेगा, इस बारे में आलाकमान और राजस्थान के प्रभारी अजय माकन तय करेंगे।

यह बात भी बताती है कि आलाकमान की ओर से सभी को स्पष्ट रूप से संकेत दिए जा

(शेष पृष्ठ 5 पर)